5. जनजाति

(TRIBE)

5.1. बोंडा जनजाति

(Bonda Tribe)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- बोंडा विकास एजेंसी (**BDA**) ने उड़ीसा के मलकानगिरी जिले के बोंडा आबादी वाले सुदूर गांवों में जांच और सर्वेक्षण का कार्य आरंभ किया है।

बोंडा जनजातिः एक परिचय

- बोंडा दक्षिण पश्चिमी उड़ीसा के मलकानगिरी जिले में निवास करने वाली प्राचीन जनजातियों में से एक है।
- बोंडा को अनुसूचित जनजाति में रखा गया है और इन्हें दो समूहों में विभाजित किया जाता है- *अपर* बोंडा और *लोअर* बोंडा।
- बोंडा जनजाति की अपनी भाषा **"रेमो"** है। इस भाषा की लिपि नहीं है। यह मुंदरी भाषा समूह से संबंधित है। शोधकर्ताओं के अनुसार यह आस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार के सदस्य हैं।
- वे अभी भी अपनी आदिम सामाजिक प्रथाओं और परंपराओं को अपनाये हुए हैं।
- बोंडा में अनूठी विवाह परंपरा है जो कि मातृसत्तात्मक व्यवस्था प्रदर्शित करती है इसमें अधिक आयु की महिलाएं अपने से कम आयु के पुरुषों से विवाह करती हैं।

5.2. टोडा जनजाति

(Toda Tribe)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, जनजातीय अनुसंधान केंद्र (TRC) ऊंटी ने जनगणना निदेशालय की इस रिपोर्ट का खंडन किया है कि टोडा और कोटा बोलियां विलुप्त होने के कगार पर हैं।

टोडा जनजाति के संबंध में

- **विस्तार**: दक्षिणी भारत के पृथक नीलगिरि पठारी क्षेत्रों में।
- अपने आस-पास के लोगों से पहनावे, व्यवहार और रिवाजों में भिन्नता के कारण टोडा जनजाति ने लोगों का अत्यधिक ध्यान आकर्षित किया है।
- टोडा जनजाति की भूमि अब नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व का एक हिस्सा है। यह बायोस्फीयर रिजर्व यूनेस्को द्वारा निर्दिष्ट एक इंटरनेशनल बायोस्फीयर रिजर्व है तथा इसे यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल भी घोषित किया गया है।
- इनका एकमात्र व्यवसाय पशुचारण व दुग्ध-उत्पादन है। इनके धर्म में भैंस का प्रमुख स्थान है।

कोटा (Kota) जनजाति के संबंध में

- कोटा जनजाति को तमिलनाडु की नीलगिरि पहाड़ियों के लिए देशज (indigenous) माना जाता है। उनका कोटा नाम बाहरी लोगों द्वारा दिया गया था। वे स्वंय को कोव्स (kovs) कहते हैं।
- कोटा जनजातीय भाषा जिसे "को-वी मा- न्ट"("Ko-v Ma-nt") कहा जाता है, कन्नड़ भाषा की अति प्राचीन व आदिम बोली है तथा यह टोडा भाषा से काफी निकटता से जुड़ी हुई है।
- कोटा जनजाति स्वंय को हिंदू मानती है। वे जाति व्यवस्था में विश्वास नहीं करते हैं।

5.3. सोलिगा जनजाति

(Soliga Tribe)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- कॉफी बोर्ड और सामाजिक कल्याण विभाग ने सोलिगा जनजाति द्वारा विकसित फलियों (बीन्स) की ब्रांडिंग हेतु 2.05 करोड़ रुपये की एक परियोजना आरंभ की है।

सोलिगा जनजाति के संबंध में

- सोलिगा खानाबदोश लोग हैं जो सदियों से **दक्षिणी कर्नाटक के बिलिगिरिरंगा पहाड़ी क्षेत्र** में रहते हैं।
- सोलिगा- इनके नाम का अर्थ है बांस का बच्चा तथा ये लोग शहद, जामुन और लकड़ी जैसे वन्य उत्पादों पर अपना जीवन यापन करते हैं।
- सोलिगा जनजाति द्वारा, शोलगा भाषा (Soliganudi) बोली जाती है जोकि द्रविड़ परिवार की एक भाषा है।

5.4. रियांग जनजाति

(Reang Tribe)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, त्रिपुरा की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति, रियांग पर एक पुस्तक का विमोचन किया गया है।

रियांग जनजाति के संबंध में

- ये एक चरवाहा (पशुचारण) जनजाति है।
- ये स्वंय की पहचान **ब्रू (BRU)** के रूप में करते हैं।
- रियांग समाज की प्रकृति पितृसत्तात्मक है।
- ये **काओ-ब्रू (Kao-Bru) भाषा** बोलते हैं जो **तिब्बती-बर्मी मूल** की है। हालांकि, इनकी अपनी कोई लिपि नहीं है।
- ये **'होजागिरि'** लोक नृत्य के लिए जाने जाते हैं जिसमें महिलाओं का एक समूह मिट्टी के घड़ों पर खड़े होकर स्वयं को संतुलित करता है और साथ ही रंगमंच की अन्य सामग्रियों का उपयोग कर प्रदर्शन करता है। यह लोकनृत्य फसलों की कटाई के साथ जुड़ा हुआ है।

5.5. सिद्दी जनजाति

(Siddi Tribe)

- **सिद्दी** भारत और पाकिस्तान में निवास करने वाला एक नृजातीय समूह है, जिन्हें **सिदी, हब्शी** या **मकरानी** भी कहा जाता है।
- ये उत्तर-पूर्वी और पूर्वी अफ्रीका में अफ्रीकियों के वंशज हैं, जिन्हें भारत में दासों, सैनिकों या नौकरों के रूप में लाया गया था।
- सिद्दी दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका के बंटू लोगों के वंशज हैं। इनमें से कुछ व्यापारी, नाविक, गिरमिटिया दास तथा भाड़े के सैनिक (mercenaries) थे।
- **विस्तार:** इस जनजाति की अधिकांश आबादी भारत में कर्नाटक, गुजरात और हैदराबाद तथा पाकिस्तान में मकरान तथा कराची में निवास करती है।
- **धर्म:** सिद्दी मुख्य रूप से सूफी मुस्लिम हैं, यद्यपि कुछ हिन्दू एवं रोमन कैथोलिक ईसाई भी हैं।
- गुजरात में सिद्दी गिर राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभयारण्य के आस-पास निवास करते हैं।

5.6. जारवा जनजाति

(Jarawa Tribe)

- **जारवा, ग्रेट अंडमानी, ओंगे और सेंटिनली** अंडमान द्वीपों की जनजातियाँ हैं। ऐसा माना जाता है कि ये जनजातियाँ यहाँ 55,000 वर्षों से निवास कर रही हैं।
- जारवा एक शिकारी-संग्राहक (hunter-gatherer) जनजाति है, जिन्हें पृथ्वी पर सबसे एकांकी लोगों में से एक माना जाता है। ये अंडमान द्वीप के घने जंगलों में रहती हैं तथा बाह्य विश्व से पूर्ण रूप से कटी हुई हैं।
- यद्यपि बाहरी लोगों के बढ़ते प्रवाह के कारण जारवा विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रहे हैं।

अन्य जनजातियों के संबंध में

- **अंडमानी (Andamanese)-** इनकी जनसंख्या इन द्वीपों में पाई जाने वाली अन्य जनजातियों में सर्वाधिक है। ये अंडमानी हिंदी बोलते हैं।

- **ओंगे (Onges)-** यह भारत में सर्वाधिक आदिम जनजातियों में से एक है। ये अर्द्ध खानाबदोश हैं तथा प्रकृति द्वारा प्रदत्त खाद्य पर पूर्णतःनिर्भर हैं। ये कला-कौशल और शिल्प विकसित कर चुके हैं तथा डोंगियों (canoes) का निर्माण कर सकते हैं।
- **सेंटिनली (Sentinelese)-** ये उत्तरी सेंटिनल द्वीप के निवासी हैं और पूर्ण एकांकी जीवन व्यतीत करते हैं। इनका व्यवहार बहुत शत्रुतापूर्ण होता है तथा ये अपने द्वीप को कभी नहीं छोड़ते हैं।

5.7. कोया जनजाति

(Koya Tribe)

- कोया आंध्र प्रदेश की कुछ बहुभाषी तथा बहु नस्लीय कृषक जनजातियों में से एक हैं।
- शारीरिक रूप से इन्हें आस्ट्रेलॉयड के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। कोया स्वयं को "**कोइथुर**" कहते हैं।
- कोया "**कोयी**" भाषा बोलते हैं। यह गोंडी भाषा से निकटता से सम्बंधित है तथा यह तेलुगु से प्रभावित है।
- कोया अपने स्वयं के नृजातीय धर्म का पालन करते हैं, किन्तु वे बहुत से हिन्दू देवी-देवताओं की उपासना भी करते हैं।